بِسْجِلِللهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيثِمِ

AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

अल-कुरआन क्या कहता है

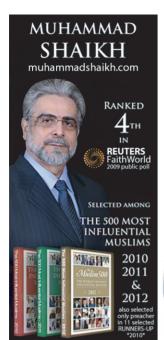
हिजाब के बारे में

संकलक: मुहम्मद शेख

#अब्दुल्लाह #कुरआनकाबशर

06 अगस्त 2011 को IIPC कनाडा द्वारा प्रकाशित





महम्मद शेख को शेख अँहमद दीदात द्वारा 1988 में डरबन .दक्षिण अफ्रीका के IPCI दवारा आयोजित दावा और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण होने के लिए चना गया था। इस दावा और तुलनात्मक धर्म प्रशिक्षण के पुरा होने पर महम्मद शेख^{ें} को IPCI दवारा एक प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदत ने प्रस्तृत किया था



सोशल मीडिया नेटवर्क

You Tube

facebook.

Available on the App Store

Google play

1 Instagram

ÉTV

androidty

Roku

amazon firetv



ONIDIA SHIELD



OTT PLAYER



Podcasts



TIKILIVE



ml Mi Box



Jackoo



Shava



ZAAP TV







meanan







दान करें :-

शीर्षक:-डन्टरनेशनल डस्लामिक प्रोपेगेशन सेन्टर कनाडा 7060 मकलाउघलीं रोड मिससीससाउगा ONI 5W1W7 कनाडा

बैंक का नाम- TD CANADA TRUST

www.themuslim500.com

अकाउंट नम्बर:5042218 टांसिट नम्बर- 15972 कनाडा IBAN - 026009593

स्विफट कोड:TDOMCATTTOR इंसटीट्युशन नम्बर- 004 शाखा का नम्बर:1597 (अमेरिका से दान देने वालों के लिए) ABA026009593

132 मैन ST साउथ, रॉकवुड, ON NOB 2KO ,कनाडा 1-800-867-0180

अभी पंजीकरण करें



www.iipccanada.com info@iipccanada.com



पुस्तिका का परिचय

पुस्तिका के बारे में यह मुहम्मद शेख द्वारा संकलित एक व्याख्यान संदर्भ पुस्तिका है यह हर विषय के व्याख्यान के अनुसार है इस पुस्तिका का उद्देश्य पाठक को कुरआन के विषय से परिचित कराना है। इसका अध्ययन स्वयं किया जा सकता है और यह हर विषय के वीडियो व्याख्यान को भी पूरा करता है जो इसके ही साथ होता है। वीडियो व्याख्यान में चर्चा के अनुसार इस प्स्तिका में विषय से संबंधित आयत (क्रआन की आयतें) हैं। व्याख्यान के बाद प्रश्न उठाए जाते हैं, और उनके उत्तर आयत द्वारा दिए जाते हैं। वीडियो व्याख्यान और उनके व्याख्यान संदर्भ पुस्तिकाएं हमारी वेबसाइट www.iipccanada.com पर उपलब्ध हैं। यहां दिए गए क़ुरआन के संदर्भ संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन विषय का मूल सार प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकाशन में जिन संदर्भों को बाहर रखा गया है, उन्हें किसी भी अच्छी सहमति का उपयोग करके शोध किया जा सकता है और यह पता चलेगा कि इस प्रकाशन में पेश किया गया चयन पूरे अनुक्रम में सामंजस्य स्थापित करेगा। यह आशा की जाती है कि मुस्लिम(आज्ञाकारी) पाठक इन आयतों को अपने अरबी पाठ के साथ याद करेंगे और अपने मित्रों और सहयोगियों को दावत (इस्लाम का प्रचार) में संलग्न करेंगे, और अपनी सलाह/प्रार्थना में भी इसे पढ़ सकेंगे। इस तरह, प्स्तिका रोज़मर्रा की ज़िंदगी में म्स्लिम के लिए एक उपयोगी उपकरण बन जाती है - इंशाअल्लाह। आयत का अन्वाद मुहम्मद शेख ने किया है। विषय के संबंध में किसी भी प्रश्न, टिप्पणी या स्झाव का ईमेल के माध्यम से किया जा सकता है: info@iipccanada.com

AL-QURAN THE CRITERION



मुहम्मद शेख के बारे में

मुहम्मद शेख इस्लाम और तुलनात्मक धर्म पर एक सार्वजनिक वक्ता हैं। उनके व्याख्यान कुरआन के पाठ पर आधारित हैं जो कई गलत धारणाओं को दूर करने, प्रामाणिक इस्लामी

मान्यताओं को प्रस्तुत करने और कुरआन के अपने आंतरिक सब्त के आधार पर तर्कसंगत और उद्देश्य विश्लेषण के लिए अपील करने का काम करते हैं। राजनीतिक या सांप्रदायिक पक्ष लिए बिना, वह लोगों को यह समझने और विश्लेषण करने के लिए कहते है कि कुरआन सबसे पहले किसी विषय के बारे में क्या कहता है, क्योंकि यह कुरआन है जो इस्लाम का प्रमुख आधिकारिक पाठ और अल्लाह/भगवान का वचन और मानव जाति के लिए स्पष्ट सच्चाई है। मुहम्मद शेख को कराची पाकिस्तान से शेख अहमद दीदत द्वारा 1988 में IPCI इरबन दिक्षण अफ्रीका द्वारा आयोजित दावाह और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण से गुजरने के लिए चुना गया था। इस दावाह कोर्स के पूरा होने के बाद मुहम्मद शेख को IPCI से एक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदात ने प्रस्तुत किया था। AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

IIPC-इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर के बारे में

इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर (IIPC) एक दावाह संगठन है जिसका उद्देश्य अल-कुरआन अल्लाह/भगवान की पुस्तक को

बढ़ावा देना है, IIPC की स्थापना 1987 में मुहम्मद शेख द्वारा कराची, पाकिस्तान में की गई थी। हालाँकि IIPC का वर्तमान स्थान एक पंजीकृत धर्मार्थ संगठन के रूप में रॉकव्ड, कनाडा में है। यह मुहम्मद शेख द्वारा दिए गए व्याख्यानों के माध्यम से अल-क्रआन को समझने और सराहना करने के लिए सभी धर्मों और आस्था रखने वाले लोगों को आमंत्रित करता है, और यह आयोजन, मुद्रित प्रकाशनों इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शंस, इंटरनेट टीवी द्वारा प्रसारण और इसकी वेबसाइट के माध्यम से जनता तक पहुंचने का प्रयास करता है। केंद्र अल-इस्लाम को अल्लाह/भगवान की आयत(निशानी) के आधार पर अपने प्राचीन रूप में प्रचारित करने का प्रयास करता है ताकि आम जनता मुफ्त में सीखने की सामग्री के माध्यम से अपनी गतिविधियों से लाभान्वित हो सके और वक्ता के साथ सीधे परामर्श करे अपने दैनिक जीवन में अल-क़ुरआन के अभ्यास और समझ के बारे में। केंद्र का कोई राजनीतिक या सांप्रदायिक संबद्धता नहीं है और यह केवल एक धर्मार्थ आधार पर फि-सबील अल्लाह चलाया जा रहा है। हम सभी म्सलमानों से अल्लाह/भगवान के लिए हमारे साथ हाथ मिलाने का अनुरोध करते हैं और दावाह के हमारे मिशन को समर्थन करने का अनुरोध करते हैं (यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए)

अल- कुरआन से हमारा सिद्धांत

याद करो जब अल्लाह/भगवान
ने उन लोगों से, जिन्हें किताब
प्रदान की गई थी, वचन लिया
था कि उसे लोगों के सामने
भली-भाँति स्पष्ट करोगे उसे
छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने
उसे पीठ पीछे डाल दिया और
थोड़ी कीमत पर उसका सौदा
किया कितना बुरा सौदा है
जो ये कर रहे है!

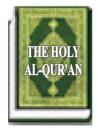
आल-ए-इमरान 3:187

पढ़!

अपने रब/भगवान के नाम के साथ अल-क़्रआन अल्लाह/भगवान की किताब

अल-कुरान से 6237 में से सिर्फ दो आयतें।

और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत करनेवाला?



क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते।

54:17

- *मानवता की घोषणा
- *दया और बुद्धि का झरना।
- *लापरवाह के लिए एक चेतावनी।
- *भटके ह्ए के लिए एक मार्गदर्शक।
- *संदिग्ध के लिए एक आश्वासन।
- *कष्ट के लिए एक धीरज।
- *निराश लोगों के लिए एक आशा।

अल-वाक्या 56

79.उसको नहीं छू सकते सिवाय जो मृताहिर/शृद्ध हैं।

ألُوَاقِعَةِ ٥٦

وَيُمَسُّكَ الرَّاالْمُطَهُّرُوْنَ ﴿

अश-शूरा 42

51.और किसी बशर/व्यक्ति के लिए नहीं है कि अल्लाह/
भगवान उससे कलाम/बातचीत करे सिवाय वहयी/प्रेरणा के या हिजाब/पर्दे के पीछे से या रस्ल/संदेशवाहक को भेजकर, बस वह उसकी अनुमति से वहयी/प्रेरणा करे जो वह चाहे। निश्चित ही वह (अल्लाह/भगवान) आला/उच्च, हिकमत वाला/तत्वदशीं है।

ٱلشَّوْرٰي ٤٢

ۉڡٵػٵؽڶؚۺۺڔ ٵڹٛؾ۠ڲڵڔٙۘڡۘٷٳۺ۠ڰٳڷٳۉڂڲٵ ٲۉؠڹٛٷڒڛڶڒۺٷڰ ٷؽۯڛڶڒۺٷڰ ڡؽٷڿؽڽٳۮ۬ڹڄڡٵؽۺٵٷ ٳٮؙۜٛۘٛؗٷڴۣػڮؽؙڗ۠۞

मरयम 19

- 16.और किताब में मरयम को याद/स्मरण कर जब उसने अपने अहल/परिवार से शरकी/ पूर्व स्थान पर अलग ह्यी।
- 17.बस उसने उनके अलावा
 हिजाब/परदा किया बस हमने
 उसकी ओर अपनी रूह/सार/
 सारांश भेजा बस वह ठीक-ठाक
 उसके लिए बशर/व्यक्ति का
 उदाहरण थी।
- 18.3स (यानी मरयम) ने कहा निश्चित ही मैं तुझसे अपने रब/पालनेवाले की शरण चाहती हूँ अगर तू परहेज़गार है।
- 19.3सने कहा निश्चित ही मैं तेरे
 रब/पालनेवाले का रसूल/
 सन्देशवाहक हूँ। ताकि तुझे
 एक न्यायोचित किया हुआ
 लड़का प्रदान करूँ।

مُرْكِيمَ ١٩

ۅؙٳۮٚٷؙڣٳڷڮؿۻؘؘۘڡۯؽؙۘۘۘػؙ ٳڿٳڹٛۺؙؙؙؙؙۘػؘ ؙۻٛٳۿڸؠٵڡڰٳڽٞٵۺۯۊؚؾٳڽؖ

ڡؘٲڲ۬ڬڎؗڝ۬ۮۮۏڹۿٟۮڿؚٵۘؗٵۨ ڡؙٲۯڛڶٮؙٵٳڮۿٵۯۏۘڂٵ ڡؙڰؙؗۜڲڶڮۿٵڹۺٛٵؚڛۅؾؖٳڛ

> قَالَتْ إِنِّنَ ٱعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ₪

ۊٙٵڶٳٮۜٞؠؖٲٲڬٲۯٮٛٛٷڷۯؾؚڮؖ ؚڒۿٮؘڷڮڠؙڶؠٞٲڒڮؾؖٵ؈

आल-ए-इमरान 3

- 42.और जब फ़रिश्तों/देवदूतों ने कहा ऐ मरयम निश्चित ही अल्लाह/भगवान ने तुझे चुन लिया और तुझे शुद्ध किया और तुझे जहानों/संसारों की स्त्रियों पर चुन लिया।
- 14.लोगों के लिए ज़ीनत/आकर्षण/
 अलंकृत किया गया है कामनाओं का प्रेम, स्त्रियों से और बेटों से और सोने और चांदी के ढेरों से और निशान किए हुए घोड़ों से और मवेशी और खेतों से यह इस सांसारिक जीवन का मता/साजो सामान है और अल्लाह/भगवान के समीप श्रेष्ठ ठिकाना है।

ال عِهْرَنَ ٣

ۅٙٳۮ۬ۛۊؘٵڵؾؚٵڵؠڵڵؠۣڲڎؙؽؠۯؽؚۄؙ ٳٮۜٛٵٮڵڎٳڞڟڣ۠ٮڮؚٷڟؠۜٞۯڮؚ ۅٳڞڟڣؠڮعڵ؞ڹڛٵ؞ؚٳڵۼڶؠؘؽڽ

نُتِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّالثَّهُ وَتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِالْمُقَنْظَرَةِ مِنَ النَّهُ هَبِ وَالْفِضِّهِ وَالْاَنْعَلِمُ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامُ وَالْحَرْثِ وَاللَّهُ عِنْلَ وَالْحَادِةِ اللَّهُ نَيَا الْمُسَاعِ وَاللَّهُ عِنْلَ وَحُسْنُ الْمَالِ ٤

अन-नूर 24

31.और कह दे मोमिन/विश्वासी सित्रयों के लिए कि वह अपनी बसारत/अंतर्दृष्टि में से नीचा रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और वह अपने आकर्षण/अलंकरण को प्रकट नहीं करें सिवाय जो उससे ज़ाहिर/प्रकट है और चाहिए वह अपनी ओढ़नियों/दुपट्टे के साथ अपनी जेबों/सीनों के ऊपर जर्ब/प्रहार लगाएं..........

ٱلنُّوْرِ ٢٤

ٷڰؙڶڵؚڷٷؙؙؚٛٞڡڹؙؾ ؠۼٛڞؙڞ۬؆ٛۻٛٵڹڞٳڔۿؚڽ ٷڬٛڣؙڟؽ؋ۯٷؘڿۿؙڽ ۅؘڒؽڹڔؽؽڔؽؽۺؙؿ ٳڷٳٚڡٵڟۿڒڡؚۿ۬ٵ ٷڵؽڞ۬ڔڹؽڔڿؙۺؙڔۿؚڽ ۼڵڿؙٷؠۿڹۜۦ۔۔

महत्वपूर्ण बात:-

पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए शारीरिक और नफ़्सयाती/मनोभावी रूप में आकर्षण/अलंकरण होती हैं। 31.और वह अपनी जीनत/आकर्षण/ अलंकरण को नुमायां नहीं करें सिवाय अपने पतियों के लिए. या अपने आबा/पिताओं के लिए, या अपने पतियों के आबा/पिताओं के लिए, या अपने पत्रों के लिए, या अपने पतियों के पत्रों के लिए, या अपने भाइयों के लिए या अपने भतीजों के लिए. या अपने भांजों के लिए या अपनी स्त्रियों के लिए, या उनके लिए जो उनके दाहिने की स्वामित्व/ अधीनस्थ हैं, या अनुसरण वालों के लिए अतिरिक्त माहिर/विशेषज्ञ पुरुषों में से हों, या वह बच्चे जिंन पर स्त्रियों के गुप्तांग प्रकट नहीं हए और वह अपने पैरों के साथ धरती पर जर्ब/मारकर न चलें कि अपनी ज़ीनत/आकर्षण/ अलंकरण में से जो वह छपाती हैं, जान लिया जाएगा। और जो कोई विश्वासी हैं सब इकट्ठे होकर अल्लाह/भगवान की ओर तौबा करो, ताकि त्म फ़लाह/सफलता पाओ।

महत्वपूर्ण बात:-

1. किसी के सामने पाँव धरती पर मारकर न चलें कि छुपी हुई ज़ीनत/आकर्षण/अलंकरण/मनोभाव की कामनाएं जानी जाए यानी सिर, चेहरा, हाथ कुहनियों तक और पैर टखनों तक के अतिरिक्त।

अल-माइदा 5

6.ऐ वह लोगों जो विश्वास लाए! जब तुम सलात/नमाज़/प्रार्थना के लिए खड़े हो, बस अपने चेहरों को धोलो और अपने हाथों को कुहनियों तक (धोलो) और अपने सरों का मसाह करो/मलो और पैरों को टख़नों तक (धोलो).........

اَلْمَائِلُةِ ٥

ێۘٳێؙۿٵڷڵؚڹؙؽ۬ٵؗڡؙٮؙٛٷٛٳ ٳۮؘٳڨؙؠؙؾؙڎؙٳڶؽٳڵڞڵۅۊ ڡٵۼ۫ڛٮٮؙٷٳٷڿؙۅۿػؙۿ ۅؘٳؽڽؚٮؽػؙڎٳڶؽٳڶؠؙڒڶۣڣؚۊ ٷٳڝٛڿٷٳڹۯٷڛٮػؙڎ ٷٲۯؙڿؙڶػؙڎؙٳڶؽٳڶڴۼڹؽڹ ؞۔۔

महत्वपूर्ण बातें:-

- 1.सर: अक्ल/बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है।
- 2.चेहरा: शनाख्त/पहचान का प्रतिनिधित्व करता है।
- 3.हाथ कोहनियों तक: काम का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- 4.पैर टख़नों तक: चाल चलन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अल-अहजाब 33

59.ऐ नबी/भविष्यवक्ता कह दे अपनी अज़वाज/जोड़ों और अपनी पुत्रियों और विश्वासियों की स्त्रियों के लिए कि वह अपने ऊपर अपने चोग़ों से बुनियाद/आधार बना लें। यह बुनियाद/आधार है कि वह पहचान ली जाएं, बस वह सताई ना जाएं। और अल्लाह/ भगवान क्षमा करने वाला है, रहम/दया/कृपा करने वाला है। ٱلْاَحْزَابِ ٢٣

يَايُّهُاالنَّبِئُ قُلُ لِّكِرُّواْجِكَ وَبَنْتِكَ وَنِسُاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُكُ نِيْنَ عَلَيْنَ مِنْ جَلابِيْهِ ذَلِكَ اَدْ نَى اَنْ يَغْرَفْنَ فَلاَيُؤُذَيْنَ فَكَانَ اللَّهُ عَفُوْرًا رَّجِيًّا ۞

33.और अपने घरों में संबंध रखों और तुम बनाओं शृंगार ना करो विगत अज्ञानकाल के जैसा बनाओं शृंगार, और सलात/नमाज़/प्रार्थना स्थापित करों और औचित्य दो और अल्लाह/भगवान और उसके रसूल/संदेशवाहक का पालन करो। निश्चित ही अहले बैत/ घरवालों अल्लाह/भगवान तुम्हारे बारे में निजासत/गन्दगी ले जाने के लिए संकल्प करता है और वह तुम्हारी तहारत/ शुद्धता करता है तहारत/ शुद्धता थोड़ी थोड़ी हैं।

ۅٛڡٞۯ۬ڬ؈۬ٛڹؙؽؙۏڗػؙڹٞ ۅؘڷٳٛڹڔۜڿؙڹ ؾڹڗؙٛڂٵۿؚڸؾٙۊؚٵڵٳٛۅٝڸ ۅٵۊؠ۬ڹٵڞؖڵۄؘٷٳؾؽڹٵڶڗ۠ڴۅؘؖ ۅٲڟٟۼ۬ؽٵۺ۠ۮٷۯڛؙۅٝڵڎ ٳٮٞؠٵؽؙڔؽؙۮٵۺ۠ۮ ڔؽؙؙۮٚۿۘڹۘۼڹٛڬؙٷٳڶڔڗۻڛ ۅؽؙڟۄٚۯؙڬؙۄ۫ڗڟۿؽ۫ٵڞۧ

अल-बक़रा 2

134.वह एक उम्मत/जन्मत थी
जो गुज़र चुकी, उन्हीं के
लिए है जो उन्होंने कमाया,
और तुम्हारे लिए है जो कुछ
तुमने कमाया ,और तुमसे
प्रश्न नही किया जायेगा
उसका जो कुछ वह किया
करते थे।

اَلُبَقَرَةِ ٢

تِلْكَ الْمُكُنَّ قَالَ خَلَثَ لَهُ الْمُكُنَّ قَالَ خَلَثَ لَكُمُ الْمُكَاكِنِينَ فَلَكُنُونَ الْمُكَانُونَ ﴿
وَلَا تُشْكَانُونَ الْمُخْمَلُونَ ﴿
عَمَّا كَانُوْ الْمُخْمَلُونَ ﴿

अन-निसा 4

15.और तुम्हारी स्त्रियों में से जो फ़ाहिशा/अश्लीलता करती हुई आयें बस तुममें से उन पर चार गवाह तलाश करो। बस यदि वह गवाही दें बस उनको घरों में रोक लो यहाँ तक की उन पर मृत्यु पूरी हो जाये या अल्लाह/भगवान उनके लिए कोई मार्ग बना दे।

النِسَاءِ ٤

وَالِّتِي َالْتِكُونُ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَا بِكُمْر فَاسْتَشْمِ لُوْاعَلِمُنَ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ فَانْ شَمِكُوْهُنَ فِي الْبُيُوتِ فَامُسِكُوْهُنَ فِي الْبُيُوتِ كَتِّى يَتُوفِّهُنَ فِي الْبُيُوتِ كَتِّى يَتُوفِّهُنَ فِي الْبُيُوتِ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿

अल-अहज़ाब 33

32.ऐ नबी/भविष्यवक्ता की स्त्रियों!
तुम कदापि नहीं हो जैसे कोई
एक स्त्रियों में से हो, अगर
तुम परहेज़ करोगी बस तुम
क़ौल/बातचीत के साथ अधीन
ना हो, बस वह जिसके दिल
में रोग है तमा/लालच करने
लगेगा और मारूफ़/जाना
पहचाना कहा हुआ कहो।

ٱلْاَحْزَابِ ٢٣

لِنِسَاءَالنَّبِيّ لَسَٰتُنَّ گاکسِ مِّنَ النِّسَاءَ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تُخْضَعُنَ بِالْقَوْلِ فَيُظْمَعُ الَّذِي فِي فَلْ قَلْبِهِ مُرَضَّ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْدُوْ وَقَالَ

1.कुरिन्थियों 11

- 5. पर हर ऐसी स्त्री जो बिना सिर ढके प्रार्थना करती है या नब्वत/भविष्यवाणी करती है, वह अपने पुरुष का अपमान करती है जो उसका सिर है। वह ठीक उस स्त्री के समान है जिसने अपना सिर मुँडवा दिया है।
- 10. इसलिए परमेश्वर ने उसे जो अधिकार दिया है, उसके प्रतीक रूप में स्त्री को चाहिये कि वह अपना सिर ढके। उसे स्वर्गद्तों के कारण भी ऐसा करना चाहिये।
- 6. यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने बाल भी क्यों नहीं मुँडवा लेती। किन्तु यदि स्त्री के लिये बाल मुँडवाना लज्जा की बात है तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये।
- 15. और यह कि एक स्त्री के लिए यही उसकी शोभा है? वास्तव में उसे उसके लम्बे बाल एक प्राकृतिक ओढ़नी के रूप में दिये गये हैं।

अन-नूर 24

30.कह दे विश्वास वालों के लिए कि वह अपनी बसारत/अंतर्दृष्टि से नीचे रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। वह उनके लिए अधिक न्यायोचित है। निश्चित ही अल्लाह/भगवान ख़बर रखने वाला है उसके साथ जो वह सनाअत/बनाते हैं।

ٱلنُّوْرِ ٢٤

قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَعُضُّوُا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْافُرُّوْجَهُمْ أَ ذِلِكَ أَزْكِى لَهُمْرُ إِنَّ اللَّهُ خَبِيْرُ بِهَايِضْنَعُوْنَ ۞ 53.ऐ वह लोगों जो ईमान/विश्वास लाए तम नबी/भविष्यवक्ता के घरों में प्रवेश नहीं करो सिवाय जब तुम्हारे लिए खाने की ओर अनुमति हो अतिरिक्त उसके पकने की प्रतीक्षा में न रही. और लेकिन जब त्म्हें बुलाया जाए बस प्रवेश हो जाओं फिर जब त्म खाना खा च्को बस बिखर जाओ। और कोई हदीस/ वाक्या/घटना के लिए मिलनसार ना हो जाओ। निश्चित ही त्म्हारा यह करना नबी/ भविष्यवक्ता के लिए अजीयत/ पीड़ा है बस वह तुमसे शर्म/ लज्जा करता है और अल्लाह/ भगवान हक़ से शर्म/लज्जा नहीं करता। और जब त्म उनसे साज़ो सामान के बारे में पूछो बस उनसे हिजाब/पर्दे के पीछे से पूछो। यह तुम्हारे और उनके दिलों के लिए श्द्धता है। और तुम्हारे लिए नहीं है यह कि तुम अल्लाह/ भगवान के रस्ल/संदेशवाहक को अजीयत/पीडा दो और यह कि उसके पश्चात से तुम उसकी पत्नियों/जोड़ो से कभी भी विवाह नहीं करो। निश्चित ही वह अल्लाह/भगवान के नज़दीक/निकट बड़ी (ब्राई) है।

ٱلْاَحْزَابِ ٢٣

يَاتِّهُا الَّذِينِي المِنْ**هُ** ا الْأَأْنُ يُؤُذِنَ لَكُهُ إِلَى طَعَامِ غَارُ نظريْن إنهُ لا ولكِنُ إِذَا دُعِنْتُهُ فَادُخُلُواْ فإذاظعمتم أغفانتشروا فكشتخىمنكة وَإِذَاسَاَ لْتُمُوْهُرِ ۗ مَتَاعًا ولأأن تنكفؤا أزواجه مِنْ بَعْنِ إِلَا أَبِكُ الْ إنَّ ذٰلِكُوْكَانَ عِنْدُ اللهِ عَظِيمًا ۞

अन-नूर 24

27.ऐ वह लोगों जो विश्वास लाए!
तुम अपने घरों के अतिरिक्त
घरों में प्रवेश नहीं हो यहाँ तक
कि तुम परिचित हो। और तुम
उसके परिवार के ऊपर सलाम/
शांति कहो। यह तुम्हारे लिए
भलाई है ताकि तुम ध्यान
रखो।

ٱلنُّور ٢٤

ؽۘٲؾٞۿؙٵڷٞڹؽ۬ٵٛڡؙڹؙٷٛٳ ڵٳؾؙٞٞٞٞڬڂٷٳڹؽؙٷۛؾٵۼؽٚڔڹؽٷٛڗؚػۿؙ ڂؿ۠ؾۺؙؿٲڹٮٮۛۅٳ ٷۺؙڵؚؠٷٳۼڶؽٲۿڶۿٵ ڂڶؚػؙۿۯؘڂؽڒ۠ڷڰۯؙڶۼڴڰؙۮ۫ڗۘڎؙػڒۘٷۯ

28.बस अगर तुम उसमें किसी

एक को नहीं पाओ बस उसमें

प्रवेश ना हो यहाँ तक कि तुम्हें

अनुमित दी गयी हो। और अगर

तुम्हारे लिए कहा जाए लौट

जाओ बस लौट जाओ तुम्हारे

लिए अधिक न्यायोचित है।

और अल्लाह/भगवान जानता

है उसके साथ जो तुम कर्म

करते हो।

29.तुम पर कदापि अपराध/दोष
नहीं है यह कि तुम निर्जन
घरों में प्रवेश हो इसमें तुम्हारे
लिए मता/साज़ो सामान है।
और अल्लाह/भगवान जानता
है जो तुम पृकट करते हो,
और जो तुम छिपाते हो।

فَانُ لَّمْ تَجُدُّوْ افِيْهَا ٓ آكَا فَلَاتَکُخُلُوْهَا حَتَّى يُؤُذِنَ لَكُمْ وَانْ قِیْلَ لَكُمُّ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْاهُواَزْلَى لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَاتَعُهُ لُوْنَ عَلِيْهُ

ڵؽؗڛٛۘٛۘۼڬؽؙڮؙۄ۫ڿؙڹٵڂ ٲڹؙؾؙۯڿؙڶٷٛٳڹؽٷؾٵۼؽۯڡؘۺػؙٷڹڎٟ ڣؚۿٵٮٮۜٵڠڰػؙۄ۫ ۅؙٳٮڵؙؖؗؗؗ۠ؿۼڵۄؙٵؿؙڹٛٷۏؽۅڡٵؿڰ۫ۿ۠ٷؽ

अन-नूर <u>2</u>4

58.ऐ वह लोगों जो विश्वास लाए! त्मसे वह लोग जो त्म्हारे दाहिने की मिल्कियत/स्वामित्व/ हैं और तुममें से वह जो य्वावस्था को नहीं पहंचे तीन बार तुमसे अनुमति लें, फ़जर/ उषाकाल की नमाज/प्रार्थना से पहले और उस समय जब त्म दोपहर/अपराहन में अपने कपड़े उतार देते हो और इशा/ रात्रि की नमाज़/प्रार्थना के पश्चात, तुम्हारे लिए गुप्तांग के तीन अवकात/समय हैं। त्म्हारे ऊपर और उनके ऊपर इन (समय) के पश्चात दोष नहीं है (कि अनुमति लें)। तुम्हारे कुछ परिक्रमा/चक्कर लगायें तुम्हारे कुछ के। इसी तरह अल्लाह/भगवान त्म्हारे लिए आयात/निशानियों का स्पष्टीकरण करता है और अल्लाह/भगवान जानने वाला हिकमत/तत्वदर्शिता वाला है।

اَلنُّوْرِ ٢٤

मरयम 19

27.बस वह उसको उठाए हुए उसके साथ अपने समुदाय के पास आई उन्होंने कहा ऐ मरयम निश्चित ही तू घड़ी हुई चीज़ के साथ आई।

28.ऐ हारून की बहन ना तो तेरा बाप बुरा मनुष्य था और ना ये कि वह तेरी माँ गलत थी।

مُرُكِيمَ ١٩

فَأَتَتُ بِهِ قَوْمَهَا تَخْمِلُهُ قَالُوْ اِيْمُرُ يُمُ لَقَلُ جِئْتِ شَيْعًا فَرِيًا ۞

يَاْخُتَ هَٰرُوْنَ مَاكَانَ اَبُوْكِ امْرَ اَسُوْءٍ وَمَاكَانَتُ أُمُّكِ بَغِيًّا ﷺ

अल-क़सस 28

22.और जब उस (मूसा) ने मदयन की ओर वजह/मुख किया कहा हो सकता है मेरा रब/पालनेवाला मेरा मार्गदर्शन करेगा समान मार्ग की।

الْقَصِصِ ٢٨

ۅؙۘۘڬؾۜٵؿۅؙڿػؾڶڡٞٵؘۜٛٛٛٛٛ۠ڡڬؽؽ ڡٙٵڶۘۘۘۼڶٮؽڒڲٞ ٳڬؾٞۿڔؽڹؚؽؙڛؙۘۅؖٳٵڶڛۜؠؽؚڸؚ؈

अल-क़सस 28

23.और जब वह मदयन के पानी की जगह पर उपस्थित हुआ और लोगों में से एक उम्मत/ जनमत को उसके ऊपर पाया जो पानी पिला रही थी, और उनके अतिरिक्त दो स्त्रियों को पाया जो (अपने मवेशियों को) रोके हुए थीं। उसने कहा तुम दोनों को क्या बात है? उन दोनों ने कहा कि हम (अपने मवेशियों को) पानी नहीं पिला सकते जब तक कि यह चरवाहे/चराकर ना हटा लें और हमारा बाप बूढ़ा है।

اَلْقَصَحِصِ ٢٨

وكَتَّاوُرُدُمَّا َمُكُنِّنَ وَجُكَ عَكَيْهُ أُمَّلَةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ هُ وَوَجُكَمِنَ دُوْنِهِمُ امْرَاتَيُنِ تَكُ وُنِهِمُ امْرَاتَيُنِ تَكُ وُلِي َ قَالَتَالُانَسُةِي كَتَّى يُصْرِرُ الرِّعَاءَ عَلَيْ وَابُوْنَا شَيْحُ كَيْرً

अन-निसा 4

3. और अगर त्म्हें भय है यह कि तुम यतीमों/अनाथों में किस्त/न्याय न कर सकोगे बस स्त्रियों से जो त्म्हें अच्छी लगें उनसे विवाह कर लो, दो और तीन और चार, बस यदि त्महें भय है यह कि त्म अदल/समानता ना कर सकोगे बस एक से या जो तुम्हारे दाहने की मिल्कियत/स्वामित्व/ हैं(विवाह कर लो)।वह अधिक छोटापन होगा यह कि प्रोत्साहन त्म ना करो।

فانكحه إماظات لكثم مِّنَ النِّسُاءَ ٱلاَّتَعُـٰ إِنُّوا فَوَاحِكُ مُّ اَوْمَامَلَكُتُ إِيْمَانُكُمُ ذِلِكَ ٱدْنَى ٱلاَّتَعُوْلُوْا ﴿

अल-अहज़ाब 33

52.इसके पश्चात दूसरी स्त्रियाँ तुम्हारे लिए हलाल/वैध नहीं أَنْ تَبُكُ لَ بِهِنَّ مِنْ أَزُواجٍ हैं और न यह कि तुम उनको दूसरी अज़वाज/जोड़ें से तब्दील/ विनिमय करो और अगर तुम्हें उनका हुस्न/सौन्दर्य बह्त अद्भुत लगे सिवाय जो तुम्हारे दाहिने की स्वामित्व/मिल्कियत हैं। और निश्चित ही अल्लाह/ भगवान हर चीज़ पर निरीक्षक है।

स्त्रियों का पर्दा

24:31

- 1.अपनी बसारत/अंतर्दृष्टि से अपने आप को नीचे रखें।
- 2.अपने ग्प्तांगों की हिफ़ाज़त/रक्षा करें।
- 3. अपनी शारीरिक और मनोभावी ज़ीनत/आकर्षण/अलंकरण को किसी पर प्रदर्शन ना करें सिवाय जो उसमें ज़ाहिर/प्रकट है। उदाहरण की तौर पर सर जो अक़ल/बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है, चेहरा पहचान का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ कोहनियों तक काम का प्रतिनिधित्व करते हैं और पैर टखनों तक चाल चलन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- 4.मनोभावी ज़ीनत/आकर्षण/अलंकरण को किसी पर प्रदर्शन न करें। अर्थात एक रिश्ते के अतिरिक्त किसी के लिए प्रेम को प्रकट न करें।
- 5.किसी के सामने पैरों के साथ इस तरह धरती पर मारकर न चलें कि छुपी हुई ज़ीनत/आकर्षण/अलंकरण/मनोकामना जानी जाए। अर्थात सर, चेहरा, हाथ कोहनियों तक और पैर टखनों तक के अतिरिक्त।
- 6.अपनी जेबों/सीनों पर अपनी ओढ़िनयों/दुपट्टे के साथ अपनी जेबों/सीनों के ऊपर ज़रब/प्रहार करना अर्थात अपनी और घरवालों की गुप्त बातें न करना।
- 33:32 क़ौल/कहे हुए के साथ क़ौल/बातचीत के साथ अधीन न हों और मारूफ़/जाना पहचाना कहा हुआ कहें।
- 33:33 अपने घरों से संबंध रखें और विगत अज्ञानकाल के जैसा बनाओ शृंगार ना करें।
- 33:59 अपने ऊपर चोग़ों/लबादा से बुनियाद/आधार बनाएँ।

पुरुषों का पर्दा

24:30

1.अपने आप को अपनी बसारत/अंतर्दृष्टि से नीचा रखें।

2.अपने गुप्तांगों की हिफ़ाज़त/रक्षा करें।

33:53

3.नबी/भविष्यवक्ता के घरों में प्रवेश ना हो जब तक कि तुम्हें खाने के लिए अनुमति न दी जाए। एक दूसरे के घरों में अनुमति के अतिरिक्त प्रवेश ना हो।

4.हदीस/वाक्या/घटना के लिए मिलनसारी न दिखाएं।

5.जब भी किसी स्त्री से मता/साज़ो सामान के लिए पूछो, हिजाब/ पर्दे के पीछे से पूछो। हमारा एक दूसरे से हिजाब/पर्दा करने का असल उद्देश्य यह है कि अल्लाह/भगवान उस पर्दे के पीछे से हमसे कलाम/बातचीत करे।

प्रश्न और उत्तर

अल-बकरा 2

196.और अल्लाह/भगवान के लिए उमरा/भेंट/दर्शन और हज्ज/तीर्थ यात्रा पूरा करो। बस अगर तुम घिर जाओ तो जो सरल/आसान हो उपहार(मवेशियों से) में से दो। और अपने सर मुंडन न करो यहाँ तक कि उपहार (मवेशियों से) अपनी हलाल/ वैध होने की जगह पर पहुँच जाए............

اَلْبَقَرَةِ ٢

ۘۅؘٲؾؚٞۺؙؖۅٳٲؙڮڿۜٙٷٳڶۼؙؠؙۯٷٙۑڵڸڐؚ ٷڶڹٲڂڝؚٷؿٞٛ ٵؘڶۺؾؙۺۯؚڝؘٵٮٛۿڹٝؽ ۅؘڵڒڲڂۿٷٲۯٷڝڬڎ ڂؿ۠ؽڹۘڶۼٵڶۿۮؽؙٷڝڬڎ

प्रश्न1.क्या स्त्रियाँ अपने बाल छोटे करवा सकती हैं या उन्हें संवार सकती हैं?

आल-ए-इमरान 3

14.लोगों के लिए ज़ीनत/आकर्षण/
अलंकृत किया गया है कामनाओं का प्रेम, स्त्रियों से और बेटों से और सोने और चांदी के ढेरों से और निशान किए हुए घोड़ों से और मवेशी और खेतों से यह इस सांसारिक जीवन की मता/साज़ो सामान है और अल्लाह/भगवान के समीप श्रेष्ठ ठिकाना है।

अल-आराफ़ 7

32.कह दे किसने अल्लाह/भगवान की ज़ीनत/अलंकरण/आकर्षण को हराम/निषिद्ध किया जो उसने अपने बन्दों/नौकरों के लिए निकाली और तैय्यब/ अच्छी जीविका में से। कह दे वह विश्वास वालों के लिए सांसारिक जीवन में है और केवल पुनरुत्थान के दिन में। इसी तरह हम ज्ञान रखने वाले समुदाय के लिए आयात/ निशानियों का विस्तृत स्पष्टिकरण करते हैं।

ال عِمْزِنَ م

نُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّالشَّهُ وَتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيُرِالْمُقَنْظَرَةِ مِنَ النَّهُ هَبِ وَالْفِصِّةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ وَاللَّهُ عِنْلَ لَا حُسُنُ الْمَالِ ﴿ وَاللَّهُ عِنْلَ لَا حُسُنُ الْمَالِ

ٱلْاَعُرَافِ ٧

قُلُ مَنُ حَرَّمُ ذِيْكَ اللهِ الْدَيِّكَا خُرَجُ لِعِبَادِهٖ وَالطِّيِّبِ مِنَ الرِّزُقِ قُلْهِى لِلَّذِيْنَ امَنُوْا فَى الْحَيْوةِ اللَّهٰ نَيَا خَالِصَةً يُّوْمُ الْقِيلَةِ * كَالْ لِكَ نُفَصِّلُ الْآياتِ لِقَوْمٍ يَعُلَمُوْنَ ۞

प्रश्न2.क्या स्त्रियाँ सोने और चांदी के जेवरात/आभूषण पहन सकती हैं?

अन-नहल 16

14.और वह (अल्लाह/भगवान) ही है जिसने समुद्र को नियंत्रण किया इसलिए की तुम उसमें से ताज़ा मांस खाओ और तुम उसमें से ज़ेवर/आभूषण निकालो जिसे तुम पहनते हो। और तू देखता है नौका उसमें किस तरह चलती है और इसीलिए कि तुम उससे उसका अनुग्रह ढूढ़ो और संभवतः कि तुम श्क्र/कृतज्ञता करो।

أَلنَّكُولِ ١٦

وَهُوَالَّذِي سَخَّرَالْبَحُرَ لِتَا كُلُوْامِنْهُ كَخْمَاطِرِيًّا وَّسَنَخْرِجُوْامِنْهُ حِلْيَةٌ تَلْبِسُوْنَهَا وَلِتَبْتَغُوْامِنْ فَضَلِهِ وَلَتَبْتَغُوْامِنْ فَضَلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ 31.और वह अपनी जीनत/आकर्षण/ अलंकरण को न्मायां नहीं करें सिवाय अपने पतियों के लिए. या अपने आबा/पिताओं के लिए, या अपने पतियों के आबा/पिताओं के लिए. या अपनी पुत्रों के लिए, या अपनी पतियों के पुत्रों के लिए, या अपने भाडयों के लिए या अपने भतीजों के लिए. या अपने भांजों के लिए या अपनी स्त्रियों के लिए. या उनके लिए जो उनके दाहिने की स्वामित्व/ अधीनस्थ हैं, या अनुसरण वालों के लिए अतिरिक्त माहिर/ विशेषज्ञ पुरुषों में से हों, या वह बच्चे जिन पर स्त्रियों के गुप्तांग प्रकट नहीं हुए और वह अपने पैरों के साथ धरती पर जर्ब/मारकर न चलें कि अपनी जीनत/आकर्षण/अलंकरण में से जो वह छ्पाती हैं, जान लिया जाएगा। और जो कोई विश्वासी हैं सब इकट्ठे होकर अल्लाह/भगवान की ओर तौबा करो, ताकि तुम फ़लाह/सफलता पाओ।

وُبَنِيُ أَخُورِهِ نَّ أَوْ بِنِيدًا أَوْمَامُلُكُتُ أَيْبُانُهُنَّ <u> أوالطِّفْلِ الَّذِيْنَ</u> ۅؘڒٳؽۻڔڹؽٮٲۯ[ٛ]ڝؙڵۿ^ؾ وَتُوْبُوا إِلَى اللهِ بَهِيْعًا ٱيُّكَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

प्रश्न3.सूरह नूर 24 की आयत 31 के अनुसार क्या स्त्रियाँ अपनी ज़ीनत/आकर्षण/अलंकरण उन रिश्तोंदारों में से किसी एक को प्रकट कर सकती हैं? इसका अधिक स्पष्टीकरण करें?

अल-क़सस 28

22.और जब उस (मूसा) ने मदयन की ओर वजह/मुख किया कहा हो सकता है मेरा रब/पालनेवाला मेरा मार्गदर्शन करेगा समान मार्ग की। ألْقَصَصِ ٢٨

ۅؙۘۘڵؾۜٵؿۅۜڿۜ؋ؾؚڶڡٞٵٚءٛڡؙڵؽؽ ۊٵڶۘۘۘۼڵؠڬڔؚڮٚ ٳؽؾۿڔؽۻٛڛؙۅٳٵڶۺڔؽڸ؈

23.और जब वह मदयन के पानी की जगह पर उपस्थित हुआ और लोगों में से एक उम्मत/ जनमत को उसके ऊपर पाया जो पानी पिला रही थी, और उनके अतिरिक्त दो स्त्रियों को पाया जो (अपने मवेशियों को) रोके हुए थीं। उसने कहा तुम दोनों को क्या बात है? उन दोनों ने कहा कि हम (अपने मवेशियों को) पानी नहीं पिला सकते जब तक कि यह चरवाहे/चराकर ना हटा लें और हमारा बाप बुढ़ा है।

وكتاوردكا وكذين وجُك عليه المنطقة مِن التَّاسِ يسْقُوْن الْهُ ووَجَكَمِن دُونِهِمُ الْمُرَاتِيْن تَكُوْدُن الْمُرَاتِيْن تَكُوْدُن قالتالاسَنقِي عَلْيَالاسَنقِي وَابُوْنَا شَيْحُ كَيْرَةً

प्रश्न4.क्या स्त्रियाँ घर से बाहर नौकरी कर सकती हैं?

अल-इसरा 17

إذَا قَرَاتَ الْقُرُانَ جَعَلْنَا كِنْكَ \$45. अर जब त् अल-क़ुरआन/पढ़ाई पढ़ता है तेरे और उन लोगों के बीच जो आख़िरत/अंत पर ईमान/विश्वास नहीं लाते हम मसतर/अदृश्य हिजाब/पर्दा बना देते हैं।

46.और हम उनके दिलों पर रोक/ रुकावट बना देते हैं यह कि वह उसको समझ सकें और उनके कानों में बोझ है। और जब तु अपने रब/पालनेवाले के वाहिद/एक होने का इस कुरआन/पढ़ाई में ज़िक्र/स्मरण करता है वह अपनी पीठों पर ईर्ष्या से पलट जाते हैं।

फ़ुस्सीलत 41

5.और वह कहते हैं हमारे दिलों में आवरण है उससे जिसकी ओर तू हमें निमंत्रण देता है और हमारे कानों में बोझ है और हमारे और तेरे बीच हिजाब/पर्दा है बस तू कर, निश्चित ही हम करने वाले हैं।

وإذاذكرت رتك في القران وحُكُهُ وَلَّوْاعَلَى ٱذْبَارِهِ مُنْفُوْرًا 🟵

ل[انتكاغمٍ لُوْن ⊙

प्रश्न5.क्रआन में हिजाब/पर्दा शब्द और किस तरह उपयोग हुआ है? इसका आयात/निशानियों से स्पष्टीकरण करें?

जारी है.....

अल-मुतफ़्फ़फ़ीन 83

13.जब उस पर हमारी आयात/ निशानियाँ पाठ की जाती हैं वह कहता है यह पहले के लोगों की पंक्तियाँ हैं।

14.कदापि नहीं बल्कि उनके दिलों पर ज़ंग है वा सवव्ब इसके कारण जो वह कमा रहे थे।

15.कदापि नहीं निश्चित ही वह अपने रब/पालनेवाले के बारे में उस दिन अवश्य हिजाब/ पर्दा किए हुए होंगे।

16.फिर निश्चित ही वह अवश्य नर्क से जुड़ जाएंगे।

ٱلْمُطَفِّفِينَ ٨٣

ٳۮٳٮؙؙؙؙؙؙٛٛٛ۠۠۠۠ٵڰڮڮٳڶؿؙٵ ڡٵڶٳؘڛٳڟؚؽڒٳڷٳٷڸؽؽ۞

> ڴڷۘۘۘ۠ٚٳۘۘڹڵ^{ؾ؞} ڒٳڹؘۼڶۑۊؙڶۊؙؠؚۿؚٟ؞ٝڔ ڝۜٵػٳڹٛٷٳؽػؙڛؚڹٛۅٛڹ؈

ۘػڷٳٚٳڷۿؙؗۯۘ؏ؽ۬ڗڔۜڹۿؚڡٛۯ ؽۅٛڡؠٟڶٟٳڷؠڂٛڿۘۏٛڹۏؽ۞

ثُمِّ إِنَّهُمُ لِصَالُوا لِجَحِيْمِ اللهُ

अल-कहफ़ 18

31.वह वहीं हैं जिनके लिए सदैव के लिए बाग़ात हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उन्हें उसमें सोने के कंगन से सुसज्जित किया जाएगा, वह रेशम के हरे कपड़े पहने होंगे और भारी ज़री वस्त्र, वह तकिया लगाए बैठे होंगे बुलंद ख्तों/ऊंचे आसन पर। अच्छा प्रतिफल और श्रेष्ठ विश्राम स्थल है।

الْكَهُفِ ١٨

ٳٷڷێٟڮۘڵۿۯؙڿڹ۠ؾۢۘۘۼڶڹ ۼٛڮڔؽؗڡؚڹٛػۼؚٙۿؚٵڷڵۮڬۿۯ ؿؙڲڷٷؘؽ؋ؽۿٳڡڹٛٲڛٳۅڒڡؚڹؘۮؘۿڔ ۊۜۑڵڹڛؙۅٛڹؿٵؠٵڂٛۻٝڗٵڡۨڹڶۮڒڒؠٟڮ ۊٳڛٛؿڔٛؾڞ۠ؿڮؠؙؽۏؽۿٵۼڶٳڵڒڒٳؠٟڮ ڹۼۘۘۘۄٳڶؿۜٷٳٮؙ ۅؙۘڂڛؙڹؿؙڞؙؙۯؿڡؙڰٵ۞

प्रश्न6.आपने बताया है कि सियाब का मतलब कपड़े होता है और लिबास का मतलब आप कह रहे हैं कि पहनना होता है। दोनों शब्दों के अर्थ से सम्बंधित कोई आयत/निशानी बताएँ जिससे इन अर्थों की पुष्टि होती हो?

अल-कुरआन क्या कहता है

म्हम्मद शेख के बारे मे

- 01. रेहान अल्लाहवाला द्वारा मुहम्मद शेख का इंटरव्यू (2011)
- 02. अहमद दीदात द्वारा वैश्विक छात्रों का दावा प्रशिक्षण, IPCI डरबन SA (1988)
- 03. मुहम्मद शेख का क़रआन से मार्गदर्शन का सफ़र ? (2010)
- 04. महम्मद शेख पर जानलेवा हमला (2005)
- 05. महम्मद शेख की जबल-ए-न्र की यात्रा (2006)
- 06. महम्मद शेख दवारा किया गया हज (2006)
- 07. महम्मद शेख दवारा किया गया उमरा (2006)
- 08.म्हम्मद शेख द्वारा खतम-ए-कुरआन की द्आ (2005 के बाद)

बहस

- 11. मुहम्मद शेख की इस्माईली डॉक्टर से बहस। (1989) (उर्दू)
- 12. प्रश्नोत्तर: महम्मद शेख और पत्रकार (2008) (उर्द्)
- 13. मुहम्मद शेख की परवेज़ी को मानने वालो से बहस (2013) (उर्दू)
- 14. महम्मद शेख की दो सोमाली इमामों से बहस(अंग्रेजी) (2013)
- 15. मुहम्मद शेख की पादरी जेफ़री राइट से बहस (2013) (अंग्रेजी)
- 16. प्रश्नोत्तर : महम्मद शेख और अमेरिकी लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 17. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और कनाडा के लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 18. महम्मद शेख की कनाडा में अहमदी मुस्लिमो से बहस(2013)(अंग्रेजी)
- 19. मुहम्मद शेख की मुफ्ती अब्दल बाक़ी से बहस (2016) (उर्द)
- 20. मुहम्मद शेख ने दुबई के लोगों को आमंत्रित किया (2018)(अंग्रेजी)

अपने भगवान को पहचानें

- 21. अल-क़ुरआन क्या कहता है भगवान और भगवानों के बारे में(2011)
- 22. अल-क्रआन क्या कहता है शैतान/इब्लीस के बारे में(2004)

चुने गए व्यक्तित्व

- 23. इब्राहिम का ख़्वाब(PBUH) (2011))
- 24. मुसा की किताब(PBUH) (2011)
- 25. मरयम (PBUH)(2009)
- 26. क्या मरियम अल मसीह ईसा की एकमात्र माता-पिता हैं?(PBUH) (2013)(अंग्रेजी)
- 27. अल मसीह ईसा इब्ने मर्यम(PBUH) (2006)
- 28. अल मसीह ईसा की भविष्यवाणियाँ उनके जीवन और मृत्य के बारे में। (2013)(अंग्रेजी)
- 29. मुहम्मद (PBUH) (2002)
- 30. मुसा का पहाड़ (PBUH) (2017)

अल्लाह / भगवान की किताब

- 31. अल -किताब (2011)
- 32. अल-क क्रआन(1991, 2008)
- 33. अल्लाह/भगवान की किताब (2017)(अंग्रेजी)
- 34. क्या कुरआन अल्लाह / भगवान का कलाम/शब्द है?
- 35. तोरात और इंजील (2007)(2011)
- 36. जबूर (2008)
- 37. हदीस (2005)
- 38. सुन्नत (2004)
- 39. हिंकमत (2008)
- 40. रूह (2008)
- 41. जवाने/भाषाएं (2008)
- 42. हिदायत /मार्गदर्शन (2009)

वक्ता मुहम्मद शेख के द्वारा

अपनी पहचान/खुद को जानें

- 51. मुस्लिम (1991, 2004)
- 52. अहले किताब (किताब के लोग) (2006)
- 53. बनी इसराईल (इसराईल के बेटे) (2003, 2011)
- 54. औलिया/रक्षक) (2011)
- 55. खलीफा/उत्तराधिकारी (2013)
- 56 इमाम (2013)
- 57. फिरके/संप्रदाय
- 58. मुनाफिक
- 59. यहदी और ईसाई (2008)
- 60. अल्लाह बशर/इंसान से कैसे कलाम/बात करता है? (2019)

पारिवारिक जीवन

- 61. हिजाब/पर्दा (2011)
- 62. निकाह/विवाह (2009)
- 63. मिया बीवी/पति- पत्नी के संबंध (2011)
- 64. फाहिशा/अश्लीलता (2008)
- 65. तलाक (2009)
- 66. माता-पिता और बच्चो का संबंध (2010)

पैसे को कैसे संभालें

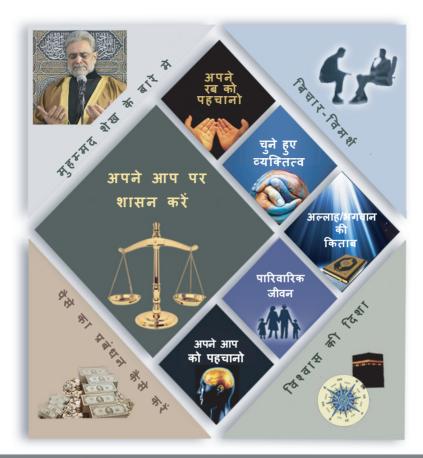
- 71. सदका और जकात/दान पुण्य (2006)
- 72. रिबा/बढोतरी (2006)
- 73 विरासत

विश्वास की दिशा

- 81. इस्लाम और मुस्लिम (पाकिस्तान अमेरिकी सांस्कृतिक केंद्र) (1991) (अंग्रेजी)
- 82. इस्लाम (2004)
- 83. इबराहीम का मजहब/धर्म (PBUH) (2010)
- 84. सीधा रास्ता (2013)
- 85. सिफारिश (2010)
- 86. कावा और क़िब्ला (2007)
- 87. मस्जिद (2013)
- 88. सलाह/प्रार्थना (2011)
- 89. मुहतर्म महीने/वर्जित महीने (2006)
- 90. रोजा/व्रत (2008)
- 91. उमरा और हज (2013)
- 92. उम्म-उल-क्रा/शहरों की मां (2019)

ह्कुम वाली आयात से अपने आप को नियंत्रित करे

- 101. जिहाद/संघर्ष (2006)
- 102. कत्ल/शारीरिक हत्या (2005)
- 103. नफसियाती कत्ल/मनोवैज्ञानिक हत्या (2010)
- 104. देहशतगरदी/आतंकवाद (2006)
- 105. जंग/युद्ध (2006)
- 106. किसास/बदल (2012)
- 107. नफसियाती जख्मों की तसल्ली/मानसिक दर्द की तसल्ली (2012)
- 108. अखलाक/अच्छा व्यवहार



ाि ि एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है जो जरूरतमंदों, अनाथों, गरीबों और बेघरों की मदद करने में व्यस्त है, चाहे उनका धर्म और रंग कुछ भी हो। अंसाररुल्लाह / अल्लाह के सहायक बनने के लिए हमारे साथ हाथ मिलाएं, स्वयंसेवक बनें और दावा के हमारे मिशन का समर्थन करें, यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण। अल्लाह आपको पुरस्कृत करे और इस दुनिया में और उसके बाद (आमीन) आपकी उदारता के लिए आशीर्वाद दे।

दान करे ओर संपर्क करे :www.iipccanada.com/donate/

